Vol 6 Issue 6 Dec 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT Golden Research Thoughts

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

'गुरु ब्रह्मानन्द की वाणी में सत्संगति की महिमा'

डॉ. ईश्वर सिंह सागवाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी),
बाबू अनन्तराम जनता महाविद्यालय, कौल (कैथल)

प्रास्ताविक –

सत्संगति का अर्थ सत्य को प्राप्त संतों की संगति, सत् का चिन्तन और सत्य का अनुसंधान है । सभी अध्यात्मवादियों व पथ–प्रदर्शक संतों ने एक स्वर से सत्संगति को मन की शुद्धता, आचरण की पवित्रता तथा भगवान के चरणों में शरण प्राप्त करने की योग्यता की साधना के रूप में स्वीकार किया है ।

ईश्वर ने मनुष्य को विवेकशक्ति इसलिए दी है कि वह सत्–असत् का निर्णय कर सत् का ग्रहण व असत् का त्याग कर सके । विवेकपूर्ण जीवन में ही भगवत्प्राप्ति हो सकती है । सत्संग ही वह परम शक्ति है जो मनुष्य के विवेक को जागृत कर सत् परमात्मा से उसका सम्बन्ध जोड़ती है । सत्संग के विषय में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं–

''बिनु सत्संग विवके न होई,
रामकृपा बिनु सुलभ न सोई'' ।[1]

अर्थात् महापुरूषों के सान्निध्य के बिना विवक नहीं होता तथा भववद्–कृपा के बिना सत्संग सुलभ नहीं होता । मानव–जीवन में सत्संगति आवश्यक है । जिनके संग से मनुष्य के दुर्गुणों का विनाश तथा सद्गुणों का विकास होता है, परन्तु सत्संग की महिमा जानने से पहले हमें संतों के लक्षण भी जानने होंगे ।

कोई भी शब्द अपने अन्तराल में एक मूल चेतनागत इतिहास छुपाये रहता है। चेतनागत प्रवृत्तियों के सम्यग् सभंजन के बाद ही कोई शब्द रूप एवं आकार ग्रहण करता है । इसी वैज्ञानिक तथ्य को सामने रखकर 'सन्त' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ ज्ञात किया जा सकता है । विद्धानों में 'सन्त' शब्द के सम्बन्ध में अनेक

प्रकार के मतभेद हो सकते हैं, किन्तु हमारे अपने विचार में 'शम' संयम 'सत्' का पालन करने वाले व्यक्ति को ही सन्त का कहा जा सकता है । अर्थात् ऐसे व्यक्ति को सन्त कह सकते है, जो सत् का अन्वेषी एवं अनुगामी है । सत् के अन्वेषण के लिए 'शम' आवश्यक है और यह प्रवृति समूचे सन्त साहित्य में स्पष्ट देखी जा सकती है । सच्चे सन्तों के लक्षण बताते हुए तुलसीदास जी कहते हैं–

षट विकार–जित अनघ अकामा ।
अचल अकिंचन सुचि सुख धामा ।।
अमित बोध अनीह मित भोगी ।
सत्य सार कवि कोबिद जोगी ।।[2]

सच्चे सन्त आडम्बर–रहित, सहज, सरल, नम्र, प्रसन्नचित्त, पूर्ण व्यवहारी, सदाचारी, कर्त्तव्यनिष्ठ, निष्कपट हृदयी होते हैं । ऐसे सन्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल बुद्धि वाले, सर्वत्यागी, अन्दर–बाहर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान एवं परमयोगी होते है । इन सर्वगुणों से युक्त सन्त ईश्वर–तुल्य ही होते है ।

गरीबदास ने 'साई सरीखे सन्त हैं, यामे मीन न मेख' कहकर तथा सन्त जैतराम ने 'सन्त सरीखे सन्त है और न दूजा कोई' ।[3] कहकर सन्तों की महिमा का गुणगान किया है तथा उन्हें भगवान का दूत माना हैं । चराचर के प्रति प्रेमभाव रखने वाले ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि ये सन्त ही है, मानव–कल्याण ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य होता है । उनकी उच्च करनी और रहनी जीवों के समक्ष आदर्श उपस्थित करती है । सन्त और परमात्मा के इसी सम्बन्ध को स्वामी ब्रह्मानन्द ने इस प्रकार स्पष्ट किया है–

सन्त साई के लाडले सन्त साई के पूत ।
सन्त न होते जगत् में साई जाता ऊत ।[4]

असंख्य प्राणियों के भार को सहन करने वाली धरती अपनी सहिष्णुता के लिए विख्यात है, जो पैरों के नीचे रोदंने के कष्ट को सहन करती है और बाढ़ को रोकने में बन–पंक्ति ही समर्थ है, उसी भॉति केवल प्रभु–भक्त साधु ही बुरे वचनों को चुपचाप सह सकता है ।

खूंदन तौ धरती सहै, बाढ़ सहै बनराइ ।
कुसबद तौ हरिजन सहै, दूजै सह्या न जाइ ।।[5]

इसी विचार को स्वामी जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

खोद पीट धरती सहे काट बाड़ बनराय ।
बोल कुबोल साधु सहै और से सहा न जाय ।।[6]

इसीलिए स्वामी जी परोपकार एवं ध्यान–साधना में रत सभी पंथों–सम्प्रदायों के सन्तों–साधकों का गुणगान व सम्मान करने को कहते हैं, जिनकी संगति से दुर्मति का नाश होकर सुमति की प्राप्ति होती है–

ऋद्धि, सिद्धि, यती, सती । हठी, तपी का करो ध्यान ।
कोठारी, भण्ड़ारी, नागा–निर्वाणी । ऋषि–मुनियों का करो सम्मान ।
धूनी, पानी, सर्व सिद्धों की वाणी, अलखिया पुजारी का होवे भान ।।
रोगी, भोगी, शोकी, योगी । गुप्त–प्रकट का हो गुणगान ।।[7]

सत्संग से अभिप्राय सज्जनों, सत्पुरूषों, सद्ग्रंथों और सद्विचारों का संग करने से है । कहा जाता है कि ''जैसी संगत वैसी रंगत' तथा संसर्ग से ही गुण–दोष उपजा करते है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार– इन पापों अवगुणों अथवा इनके वशीभूत व्यक्तियों का संग करने मात्र से मनुष्य का बुद्धिनाश व सर्वनाश हो जाता है । इसलिए स्वामी जी ने परमार्थ–पथ के पथिक के लिए दुःसंग को सर्वथा त्याज्य बताया है–

Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ।
इन पांचों से सब हुए बेकार ।।
कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी ।
इन पांचों से डूब मरे नर–नारी ।।
कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी ।
इन पांचों से बचो नर–नारी ।।[8]

सत्संग से ही जीव की अज्ञानता का निवारण होता है । वह प्रकृति जन्य विकारों से मुक्त हो जाता है तथा आत्मज्ञान प्राप्त कर जगज्जांल से अपना उद्धार कर लेता है–

जीव रहे प्रकृति के संग में । रंगा जावे उसी के रंग में ।
ब्रह्म की तरफ जो मुख को मोड़ा । सब दुःखों से नाता तोड़ा ।।[9]

अतः प्रकृति जन्य विकारों से बचने के लिए सत्संग सर्वोत्तम साधन है । सत्संगति मानव–मन पर गहरा प्रभाव ड़ालती है । चंचल चित्त इसके प्रभाव से नियन्त्रित रहता है । आध्यत्मिक चर्चा के प्रभाव से मनुष्य अपने अवगुणों को पहचान कर उन्हें दूर करने तथा अपने आचार–विचार को शुद्ध बनाने का प्रयास करता है । इस प्रकार सत्संगति के प्रभाव से मायाजन्य विकारों से मुक्त हो, सन्मार्ग पर अग्रसर होकर उसे सहज ही आत्म–साक्षात्कार हो जाता है–

मन की गति है अटपटि, झटपट जाने न कोई ।
जो मन की खटपट मिटे, चटपट दर्शन होई ।।
श्रवण, मनन, निदिध्यासन, सत पथ का शोध ।
मल, विक्षेप, आवरण मिटे, तब हो पूर्ण बोध ।।[10]

भाग्यशाली पुरूषों को ही सत्संगति की प्राप्ति होती है । इसका वास्तविक लाभ भी उन्हें ही मिल पाता है, जिनके अन्दर सच्ची जिज्ञासा व लगन होती है । इसके प्रभाव से मनुष्य में सद्गुणों का विकास होता है तथा दुर्गुण स्वतः ही दूर हो जाते है । सत्संगति की इस महिमा एवं गरिमा का गुणगान करते हुए तुलसीदास जी लिखते है–

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई । पारस परस कुधातु सुहाई ।।[11]

अर्थात् साधुजन संसार में प्रत्यक्ष पारसमणि के समान है । जिनके क्षण–भर के संगमात्र से निकृष्ट और धूर्त व्यक्ति भी लोहे से कंचनमय बन जाता है । स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने भी इसी भाव को इस प्रका लिखा है–

गुणवान की संगति से निर्गुण भी गुणी बन जाता है ।
दूध में डाला गया पानी भी दूध बन जाता है ।।[11]

परन्तु तामसी स्वभाव की प्रधानता होने के कारण दुष्टों के संग सर्वथा दुखदायी एवं त्याज्य माना गया है । 'हितोपदेश' में कहा गया है कि दुष्टों के साथ प्रीति और शत्रुता कुछ भी न करे, क्योंकि गर्म अंगार हाथ को जलाता है और ठंडा हाथ को काला कर देता है–

दुर्जनेन् समं सख्य प्रीति चापि न कारयेत् ।
उष्णों दहति चाड़कारः शीतः कृष्णायते करम ।।[12]

इस विषय में स्वामी जी ने लिखा है–

दुर्जन पुरूषों के साथ अपना भाग्य न जोड़े ।
कृतार्थ नीच पुरूष की संगति न करे ।।[13]

तुलसी दास जी ने तो दुष्ट संग को नरक से भी बूरा माना है–

बरू भलबास नरक कर ताता ।
दुष्ट संग जनि देई विधाता ।।[14]

भले लोगों पर तो सत्संगति का प्रभाव शीघ्र पड़ जाता है और वे अपना सुधार कर लेते है, किन्तु सज्जनों के संग में रहकर भी दुष्ट अपनी दुष्टता का परित्याग नहीं करते । अतः जितनी देर इन दुष्टों की संगति में रहते हैं, उतनी देर चित्त अशान्त ही बना रहता है । उनके साथ रहने मात्र से ही लोग भले लोगों के आचरण पर भी सन्देह करने लग जाते है । रहीम जी ने स्पष्ट लिखा हैं–

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि ।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहि सब ताहि ।।[15]

सन्त कबीरदास जी ने संगति के प्रभाव को बताते हए कहा है कि कभी भी मूर्खों की संगति नही करनी चाहिए, जिस प्रकार लोहा जल पर तैर नहीं सकता, उसी भॉति ये जड़, अज्ञानी भी सद्विचारों को नहीं अपना सकते । यह संगति का ही प्रभाव है कि स्वाति बूंद विभिन्न संगतियों में पड़कर विभिन्न रूप धारण करती है, यदि वह केले में पड़ती है तो कपूर बनती है, सीप में पड़कर मोती बन जाती है और वही सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती है ।

मूरिष संग न कीजिए, लोहा जलिन तिराइ ।
कदली सीप भवंग मुषीं, एक बूंद तिहॅू भाइ ।।[16]

अतः सत्संगति मानव कीर्ति, विभूति, सद्गति व समस्त उन्नति का मूल है । गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार सत्संगति आनन्द और कल्याण की हेतू है । 'सत्संग की सिद्धि ही फल है और सब साधन तो फल हैं' । इसीलिए स्वामी जी ने ''चाणक्य नीति' के अनुरूप सत्संग को ही स्वर्ग का निवास कहा है ।[18]

अतः इन्ही सब विशेषताओं के कारण सत्संग को जीवन–उद्धार का एक प्रमुख साधन माना गया है ।

आओ मिलो सत्संग में, जीवन करो उद्धार ।
लोहा पारस परस के, हो गया कंचन सार ।।[19]

1.तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड 3 / 4
2.तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड 45 / 4
3.डॉ. राजकुमार मोहल, संत जैतराम की वाणी में मानव–मूल्य के उद्धृत पृ.सं. 228
4.ब्रह्मानन्द–पचासा– 445
5.कबीर–ग्रन्थावली कुसबद कौ अंग–2, पृ.सं. 49
6.ब्रह्मानन्द–पचासा– 438
7.ब्रह्मानन्द–पचासा– 85–88
8.ब्रह्मानन्द–पचासा– 75
9.ब्रह्मानन्द–पचासा– 41–42
10.ब्रह्मानन्द–पचासा– 46
11.तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड 3 / 5
12.हितोपदेश, 2 / 80
13.नीति–विचार, 26 / 9
14.तुलसीदास, रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड 46 / 4
15.डॉ. भोलानाथ तिवारी, उद्धरण–कोश, पृ.सं. 369
16.कबीर–ग्रन्थावली, सटीक, पृ.सं. 195
17.तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड 3 / 4
18.नीति–विचार, 26 / 9
19.महात्मा मंगतराम, समता–प्रकाश, 258 / 13, पृ.सं. 228

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org